SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

गोपाल दास नीरज के काव्य में प्रेम चित्रण

डॉ. आशीष कुमार तिवारी
प्राध्यापक - हिंदी
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार

हिंदी काव्य जगत में और हिंदी फिल्मी दुनिया में गोपाल दास नीरज ने प्रेम का सबसे अधिक उजियारा फैलाया है। उनके काव्य का सार सिर्फ प्रेम है। उन्होंने प्रेम पर सिर्फ कविता ही नहीं की बल्कि अपनी कविता में लिखे प्रेम को एक विचार मानकर जिया भी। तभी तो फक्कड़ नीरज को प्रेम के मस्त गगन का सबसे चमकीला ध्रुवतारा कहा जाता है।

बीज शब्द

प्रेम, समर्पण, काव्य, निर्मित, सृष्टि, कृत्रिमता।

भूमिका

प्रेम और मृत्यु मानवीय जीवन दो चिरंतन मूल्य हैं। प्रेम और मृत्यु इन दो मूल्यों को लेकर साहित्य निर्मिति हुई है। संसार का सर्वश्रेष्ठ साहित्य भी प्रेम के साथ-साथ मृत्यु का विचार करता है। प्रेम के कारण समाज में बदलाव आते हैं। प्रेम मानव को दूसरे मानव के पास लेकर जाता है। प्रेम से आदमी 'मनुज' बन जाता है। इस सृष्टि का मूल सार है प्रेम! क्योंकि बिना प्रेम से कुछ भी नहीं होता। प्रेम के कारण इस समस्त सृष्टि को प्रेरणा मिलती है। इस विकसित जगत् का मूल ऊर्जा स्रोत अगर है तो वह प्रेम ही है। इसलिए प्रेम को इस सृष्टि का आदितत्व कहा जाए तो किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकेगी। संस्कृति का विकास एक तरह से प्रेम का विकास ही होता है। मानव-मानव के बीच जो रिश्ता होता है उस रिश्ते को प्रेम नया आयाम देता है।

शोध विस्तार

प्रेम इस सृष्टि का केवल आदितत्व ही नहीं, बल्कि मूलतत्व भी है यदि ऐसा अगर कहें तो यह गलत नहीं होगा। संसार की विविध भाषाओं में रचित महाकाव्यों पर अगर हम एक नजर डालते हैं तो यह बात दर्पण की तरह साफ हो जाती है क्योंकि इन महाकाव्यों के विषय प्रेम से ही

संबंधित है। सिवा प्रेम के इसमें कुछ और नहीं है। प्रेम समस्त मानवीय संबंधों में सर्वश्रेष्ठ मानवीय संबंध है। यह संबंध व्यक्ति को अस्वाभाविकता से स्वाभाविकता की ओर लेकर जाता है। कृत्रिमता से अकृत्रिमता की ओर ले जाता है और निरंतर लेकर जाएगा। नीरज के काव्य में प्रेम किन-किन पहलुओं से उजागर हुआ है यह भी प्रस्तुत अध्याय का एक उद्देश्य है प्राचीन कवियों से लेकर आधुनिक काल तक जितने भी कवि हुए हैं उन्होंने प्रेम की महिमा मुक्त कंठ से गाई है। आदिकवि वाल्मिकि ने भी रामायण की रचना की वो भी एक क्रौंच पक्षी के वध के कारण उनके मुख से कुछ शब्द अवतीर्ण हुए और रामायण की रचना हुई मध्यकालीन कवि कबीर प्रेम की व्याख्या इस प्रकार देते हैं

"पोथी पढ़ी पढ़ी जग मुआ पंडित भया न कोय
ढाई अच्छर प्रेम का पढ़े से पंडित होय!"[1]

प्रेम की पीड़ा से हर कोई परिचित रहता है। किंबहुना यह कथन अनुचित नहीं होगा कि प्रेम की संवेदनाएँ आदमी को प्रेम की महत्ता का परिचय करवा देती है। 1953 में प्रकाशित 'प्राण-गीत' काव्य संकलन में नीरज ने सर्व प्रथम अपने जीवन के चार सत्यों का उद्घाटन किया है। कवि ने जीवन में जो चार सत्य प्राप्त किए है उनमें से कवि ने प्रथम स्थान प्रेम को दिया है। (1) प्रेम, (2) सौंदर्य, (3) मृत्यु, (4) रोटी कवि ने इन चार सत्यों को प्राप्त किया है। नीरज प्रेम को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसका कारण यह है कि वह प्रेम के शारीरिक पक्ष के बजाय आत्मिक पक्ष पर जादा बल देते हैं। प्रेम आदमी को 'मानव' बना देता है। कवि के शब्दों में "जो पुण्य करता है वह देवता बन जाता है। जो पाप करता है वह पशु बन जाता है किंतु जो प्रेम करता है वह आदमी बन जाता है।"[2] यह कवि की मनोधारणा है जिसका बिंब उनकी कविता में कई जगह हमें देखने को मिलता है।

"प्यार है कि सभ्यता सजी खड़ी प्यार है
कि वासना बँधी पड़ी प्यार है
कि आँख में शरम जड़ी प्यार बिन मनुष्य दुश्चरित्र है
प्यार तो सदैव ही पवित्र है
प्यार तो सदैव ही पवित्र है!"[3]

निश्चित ही कबीर की 'ढाई अक्षर' की व्याख्या को नीरज की यह प्रेम की परिभाषा प्रबल चुनौती देती है। नीरज के मतानुसार प्रेम करने से जिस प्रकार आदमी 'आदमी' बन जाता है ठीक उसी प्रकार प्रेम सदैव ही पवित्र होता है। प्रेम में बहुत बड़ी शक्ति समाई रहती है। नीरज के अनुसार सभ्यता का दूसरा नाम प्रेम है। वासना को बंधन में रखनेवाली वस्तु प्रेम ही है। आँखों में उतरती हुई शरम का दूसरा नाम प्रेम ही है। प्रेम के सिवा मनुष्य का कोई चरित्र नहीं होता अपितु वह दुश्चरित्र होता है। इसके कारण प्रेम सदैव ही पवित्र होता है। यही ललकार नीरज ने प्रस्तुत काव्यपंक्तियों के माध्यम से दी है। नीरज ने प्रेम की और एक परिभाषा दी है जो आगे चलकर एक प्रसिद्ध फिल्मी गीत में तबदील हुई। मूल गीत इस प्रकार है-

"चांदनी में घोला जाए फूलों का शबाब
उसमें फिर मिलाई जाए थोड़ी सी शराब
होगा यूँ नशा जो तैयार वो प्यार है।"[4]

इस तरह से ऊपरी काव्यपंक्तियों के माध्यम से हम समझ सकते हैं कि, कवि नीरज की नजर में प्रेम का स्थान कितना महत्त्वपूर्ण है। स्वयं नीरज एक जगह कहते हैं "प्रेम समस्त मानवीय संबंधों में सर्व श्रेष्ठ मानवीय संबंध है। प्रेम ने आज तक किसी को गिराया नहीं बल्कि सूर, तुलसी, शेली, खलील जिब्रान जैसी अनेक महान आत्माओं का निर्माण किया है। इसका एकमात्र कारण यही है कि प्रेम मूल रूप में नैतिकता का विरोधी नहीं है। मेरे विचार से अनैतिक मनुष्य प्रेम कर ही नहीं सकता और जो प्रेम करता है वह किसी भी समाज की कैसी भी मान्यताओं को या जंजीरों को नहीं तोड़ता बल्कि स्वयं अपने भीतर के बंधनों को तोड़कर मुक्त हो जाता है तभी प्रेम कर पाता है।"[5]

इस विवेचन से नीरज का प्रेम कितना विराट धरातल पर खड़ा है, इस बात का हमें पता चलता है। क्योंकि प्रेम या प्रणय इस शब्द को व्यापक तथा संकुचित दोनों अर्थ में ग्रहण किया जाता है। व्यापक अर्थ में वैयक्तिकता से लेकर वैश्विकता तक इस प्रेम की परिधि है क्योंकि आज इंटरनेट के महाजाल के कारण 21 वीं सदी में संपूर्ण दुनिया की एक वैश्विक देहात के रूप में जान-पहचान हो रही है। संकुचित अर्थ में इसका प्रयोग नर-नारी के बीच आत्मिक एवं शारीरिक संबंध है और व्यापक अर्थ में मानवतावाद इसकी सीमा है। सच्चा प्रेम यह केवल

कामेच्छा, वासना और शारीरिक आकर्षण तक ही सीमित नहीं रहता, अपितु यह शरीर- मन और आत्मा का पूर्णरूपेण तादात्म्य है।

प्रेम विषयक धारणा को नीरज ने 'प्राण-गीत', 'दर्द दिया है', इन काव्यकृतियों की भूमिकाओं में स्पष्ट किया है। प्रेम नीरज के लिए 'गति' का पर्याय है। प्रेम को वे एक रहस्यपूर्ण शक्ति के रूप में कल्पित करते हैं। वे प्रेम के लिए द्वैत को आवश्यक मानते हैं। उन्हीं के शब्दों में "सृष्टि रचना करनेवाला यह आदित्तत्त्व एक होकर दो था! सृष्टि प्रसारण को अद्वैत ने द्वैत को जन्म दिया। प्रत्येक चेतनतत्व एक अपूर्ण आत्मा एक विभाजित आत्मा हो गया। उसका एक अंश बिछड़ गया जिसे खोजने के लिए बारबार आवागमन करता है। आत्मा के साथी के लिए जो प्रत्येक चेतन तत्व में प्यास और चाह है उसी का नाम प्रेम है। यह प्यास तब तक तृप्त नहीं बनेगी, जब तक उसका मन के मीत से आत्मसंबंध स्थापित नहीं होगा! यह आवागमन का चक्र तब तक चलता रहेगा जब तक वह नहीं मिलेगा! जिस दिन वह मिल जाएगा उसी दिन मुक्ति हो जाएगी!" कवि प्रेम की सहायता लेकर जन्म-मरण के इस सफर से मुक्त होना चाहता है। अर्थात यह सफर काफी लंबा और विस्तृत है। यह सफर है चौरासी लक्ष योनियों के जन्म और मरण का, जिसे कवि नीरज प्रेम की सहायता लेकर पार करना चाहते हैं। जिस दिन वह खोया हुआ साथी मिल जाएगा, कवि अपने आप स्वयं मुक्त हो जाएगा।'

यह स्पष्ट है कि ऊपरी विवेचन में नीरज ने प्रेम की जो परिभाषा दी है वह आध्यात्मिकता के ताने बाने को सामने रखते हुए की है। अर्थात यह प्रेम की प्रस्तुत व्याख्या यह नीरज का आत्मिक एवं आध्यात्मिक दर्शन है जिसके चिंतन से प्रस्तुत व्याख्या का जन्म हुआ है। 'प्राण-गीत' के बाद 'दर्द दिया है' के काव्यकृति में कवि ने अपने दर्शन को थोड़ा और अधिक स्पष्ट किया है। यहाँ 'वासना' से 'विश्वप्रेम' तक की यात्रा का रहस्य नीरज हमें समझाते हैं। "सृष्टि की प्रजनन प्रक्रिया ही वासना है! यही प्रत्येक साहित्य और कला की मूल प्रेरणा है। यही वासना भिन्न-भिन्न चेतना स्तरों पर भिन्न-भिन्न रूप धारण करती है। वासना अन्नकोश में रहती है तब प्रेम में माँसलता एवं वासना रहती है, जिसे नीरज 'स्वार्थ' कहते हैं। इस दशा में हम पाना अधिक चाहते हैं, देना नहीं चाहते हैं। इस धरातल पर कवि यौन तृष्णा का काव्य लिखता है। संयम आ जाने पर वासना प्राणमय कोश में प्रवेश करती है, तब सच्चे प्रेम का उदय होता है! स्वार्थ पूरी तरह से रपष्ट नहीं होता किंतु पाने के साथ्साथ देने का भाव भी उत्पन्न हो जाता है। प्रेम के साथ ईर्ष्या भी रहती है और यहीं से काव्य में दार्शनिकता का जन्म होता

है!"[8]. नीरज के काव्य में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों धरातल मिलते हैं। भौतिक प्रेम में संयोग और वियोग दोनों पक्ष मिलते हैं, जब कि आध्यात्मिक प्रेम को रहस्यवाद के अंतर्गत पेश करना अधिक उचित होगा! नीरज की समग्र प्रेमकविता के अध्ययन के बाद यह पता चलता है कि नीरज के प्रेमकाव्य को 4 विभागों में बाँटना होगा! मेरे अनुसंधान के अनुसार नीरज की प्रेमकविता निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित हो सकेगी - (1) वैयक्तिक प्रेमधारा, (2) मानवतावादी प्रेमधारा, (3) राष्ट्रीय एवं वैश्विक (विश्व) प्रेमधारा, (4) ईश्वरीय। प्रेमधारा का अर्थ है 'रहस्यवाद' प्रेम समर्पण है। प्रेम में 'स्व' 'पर' हो जाता है। अहं विसर्जित हो जाता है। प्रेम के सारे व्यवहार अपने प्रियतम के लिए ही होते हैं। प्रेम एक अटूट बंधन होता है, जो आदमी हँसी खुशी से उसे स्वीकृत कर लेता है। जो आदमी स्वार्थी है, प्रेम को तिजारत समझते हैं उसे प्यार करने का कोई अधिकार नहीं होता है। कवि नीरज के लिए प्रेम सर्वोपरि हैं क्योंकि-

"बिना प्यार के चले न कोई, आँधी हो या पानी हो,
नई उमर की चुनरी हो या कमरी फटी पुरानी हो,
तपे प्रेम के लिए धरित्री, जले प्रेम के लिए दिया,
कौन हृदय नहीं प्यार की जिसने की दरबानी हो!"[9]

संसार का कोई भी कवि संवेदना और चोटों की टीसों के कारण कवि बनता है। नीरज भी इसे अपवाद नहीं है। नीरज की जुबानी उनकी त्रासदी

"अनचाहा ही सदा मिला
मनचाहा कभी नहीं
यही है त्रासदी मेरी"[10]

इसी संदर्भ में महाकवि फिराख गोरखपूरी का एक शेर सटीक बैठता है

"गमे फिराक तो उसी दिन गमे-फिराक हुआ
कि उनको प्यार किया मैंने जिनसे प्यार नहीं!"[11]

कहा जाता है कि बचपन में एटा हाईस्कूल में नीरज अध्ययन कर रहे थे तब किसी लड़की से उनका प्रणय संबंध हुआ था; किंतु दुर्भाग्यवश वह उनसे सदा के लिए बिछड़ गई! नीरज ने एक जगह वार्तालाप में इसका जिक्र इन शब्दों में किया है "है तो बात इस जन्म की, लेकिन अब लगता है पिछले जन्म की! मैं तब हाईस्कूल में पढ़ता था एटा में, वह भी षोड़शी ही थी। कच्ची उम्र का प्यार अगर परवान चढ़ जाए, तभी खैरियत रहती है, नहीं तो मुझसे भावुक को तो बेहाल ही कर डालता है। मैं ही जानता हूँ उससे बिछुड़ ने पर मेरी क्या हालत हुई थी!"[12] अपनी प्रियतमा के वियोग विरह को नीरज सह नहीं पाए और उनके काव्यमानस से अकस्मात ये पंक्तियाँ सहसा निकल पड़ीं- "कितना एकाकी मम जीवन किसी पेड़ पर यदि कोई पक्षी का जोड़ा बैठा होता तो न उसे भी आँखें भरकर मैं इस डर से देखा करता कहीं नजर लग जाए न इनको[13] अपने दुख, दर्द की नजर किसी मासूम पंछियों को न लगे ऐसा सोचने वाला यह कवि निश्चित ही आदिकवि वाल्मिकि की परंपरा से अपनी परंपरा जोड़ सकेगा इसमें कोई भी संदेह नहीं है। क्योंकि स्वयं आदिकवि ने एक निषाद को शाप देकर कहा था कि, हे निषाद तुम्हें चिरंतन पद की प्राप्ति कभी नहीं होगी क्योंकि तुमने प्रेममग्न क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक नर की बिना वजह हत्या की है। यही बिंब नीरज की कविता में हमें भी नजर आता है- "मा निशाद! प्रतिष्ठात्वमगम शास्वति समः यथा क्रौंचे मिथुनदेकमवधीः काममोहितम्" यहीं से अर्थात 1942 से गोपालदास सक्सेना कवि 'नीरज' बने और नीरज के काव्य जीवन का आरंभ हुआ। कवि नीरज वैयक्तिक प्रेम से विश्व प्रेम की ओर जाने का रहस्य इस प्रकार समझाते हैं- "मेरे मत से सत्य की प्राप्ति के लिए प्रेम भी एक व्यक्तिगत साधना ही है जो अंत में जाकर विश्वसाधना का रूप धारण कर लेती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्तिगत प्रेम की परिणति सदैव ही 'ईश्वर प्रेम' अथवा 'विश्व प्रेम' में होती है।"[15]. नीरज की इस मनोधारणा से किसी को भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि प्रेम की तन्मयता ही मानव को महामानव बनाती है। इसी कारण कवींद्र रवींद्र 'विश्वकवि बने, संत ज्ञानेश्वर ने 'विश्व को ही अपना घर माना! संत तुकाराम 'आकाश' जैसे विशाल बन गए और संत रामदास 'विश्व' की चिंता करने लगे। नीरज का वैयक्तिक प्रेम उन्हें विश्व प्रेम तक किस तरह से लेकर आया यह देखना निश्चित ही जिज्ञासामयी होगा। नीरज विश्वप्रेम की ओर किस तरह से देखते हैं यह सामने आए हुए पंक्तियों से अधिक स्पष्ट होगा।

"विश्व में तुम और तुम में विश्वभर का प्यार
हर जगह ही अब तुम्हारा ही द्वार"।[16]

यहाँ आत्मगत प्रेम कवि को वैश्विक प्रेम की ओर ले गया है। नीरज के काव्य का गहराई से अध्ययन करने के बाद यह पता चलता है कि नीरज की प्रेमकविता वैयक्तिकता से लेकर वैश्विकता तक जाकर पहुँचती है। इस कविता का और भी एक अलग सोपान है ईश्वरीय प्रेम। अपना परिचय देते हुए नीरज अपनी ही कविता का सहारा लेते हुए कहते हैं

"मेरा हर शेर है अख्तर मेरी जिंदा तस्वीर
देखनेवालों ने हर लफ्ज में देखा है मुझे।"[17]

नीरज की काव्यधारा में दूसरी प्रसिद्ध धारा है मानवतावादी धारा जो नीरज के काव्य का सबसे सशक्त पहलू है, जिसे नीरज के आलोचक भी मान्य करते हैं। अर्थात नीरज के मानवतावादी विचारधारा पर सबसे जादा लेखन एवं शोधकार्य हुए हैं।

"मैंने बस मानवता को पूजा जीवन में
बस सदा आदमी के आगे झुका यह भाल"[18]
और एक जगह और भी चित्रण किया गया है-
"बस यही अपराध मैं हरबार करता हूँ
आदमी हूँ, आदमी से प्यार करता हूँ!"[19]

राष्ट्रीय काव्यधारा लिखते हुए नीरज की कलम एक अनूठा रूप धारण करती है। भारत के दुखदर्द का वर्णन करते हुए नीरज की कलम बहुत ही नुकीला रूप दिखाती है

"तुम समझ जाओगे क्या चीज है
भारतमाता तुमने बेटी किसी निर्धन की अगर देखी है!"[20]

'नील की बेटी के नाम' पाती में नीरज फिर एक बार वैश्विक दृष्टिकोण हमारे सामने आता है- "नील की बेटी तुझे मैं लिख रहा हूँ

प्रेमपाती प्रिय मुझे जितना कि भारतवर्ष जो मेरा वतन है
कम नहीं उससे तनिक प्यारा मुझे तेरा चमन है!"[21]

'पाकिस्तान के नाम', 'पुर्तगाल के नाम', 'दक्षिण अफ्रिका की रंग भेदी नीति के नाम' आदि कविताएँ नीरज के आंतरराष्ट्रीय दृष्टीकोण को ही स्पष्ट करती है। ईश्वरीय प्रेम अर्थात रहस्यवादी काव्यधारा भी नीरज की कविता में विद्यमान है। भक्ति और पूर्ण समर्पण की भावना नीरज की रहस्यवादी काव्यधारा में हमें नजर आती है। ईश्वर के प्रति सश्रद्धामयी समर्पण नीरज की कविता का मुख्य उद्देश्य रहा है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है

"तुमसे लगन लगाई
उमरभर नींद न आई साँस-साँस बन गई सुमिरणी
मृग छाला सब की सब थरिणी क्या गंगा कैसी वैतरिणी
भेद न कुछ कर पाई।" [22]

निष्कर्ष

स्वरुप हम कह सकते है कि गोपाल दास नीरज ने न केवल प्रेम, विरह, प्रकृति और जीवन से रचे बसे गीतों की रचना की, बल्कि उनके काव्य में अध्यात्म, दर्शन व सूफिज्म के दर्शन भी होते हैं। उनकी महारत न केवल गीतों में थी बल्कि गजल, हाइकू, दोहा व गद्य में भी खूब अपनी बात कही। वे हिंदी साहित्य के सिद्ध कवि थे तो उर्दू के मुकाबिल शायर भी। उन्होंने सरस भाषा में रहस्यमयी बात की। उन्हें महाकवि के बजाय जनकवि कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी

संदर्भ सूची

1. प्राणगीत 'दृष्टिकोण' पृ. 1
2. नीरज रजनावली 'दर्द दिया है' खंड 2 पृ. 28
3. नीरज रजनावली 'प्राणगीत' खंड 1 पृ. 263
4. नीरज के लोकप्रिय गीत पृ. 55
5. प्रसिद्ध गीतकार नीरज पृ. 26
6. नीरज का काव्य एक विश्लेषण पृ. 144-45
7. नीरज रजनावली 'दर्द दिया है' खंड 2 पृ. 52
8. दर्द दिया है दृष्टिकोण पृ. 13
9. नीरज रजनावली 'नीरज की पाती' खंड 2 पृ. 304

10.प्रसिद्ध गीतकार नीरज पृ. 15-16
11.बज्मे जिंदगी रंगे शायरी पृ. 226
12.प्रसिद्ध गीतकार नीरज पृ. 15-16
13.नीरज रचनावली 'नदी किनारे' खंड। पृ. 2
14.श्री वाल्मिकि रामायण वालकांड अध्याय 2 श्लोक 15
15.प्रसिद्ध गीतकार नीरज पृ. 28-29
16.नीरज रचनावली 'बादर बरस गयो' खंड 1 पृ. 247
17.नीरज की काव्यसाधना पृ. 1
18.नीरज रचनावली 'दो गीत' खंड 2 पृ. 194
19.नीरज रचनावली 'बादर बरस गयो' खंड 1 पृ. 208
20.नीरज रजनावली 'नीरज की गीतिकाएँ' खंड 3 पृ. 171
21.नीरज रचनावली 'नीरज की पाती' खंड 2 पृ. 264
22.नीरज रजनावली 'दर्द दिया है' खंड 2 पृ. 66

SHODH SANCHAR
शोध संचार